

३५ न

२५ मई को दमन विराधा जीवन बीमा निगम के दिवस तथा २१ जून को कर्मचारियों का प्रदर्शन उत्तर प्रदेश बंद आंदोलन जोनल मैनेजर श्री आर सी०

कम्युनिस्ट पार्टी का आयोजन

भरुजा के विरुद्ध

काशी, वाराणसी जिला कम्युनिस्ट पार्टी की मन्त्री परिवद की बैठक दशाश्वमेध स्थित कार्यालय में शुक्रवार को रात को हुई जिसमें लखनऊ विधान सभा भवन के समक्ष शांतिपूर्ण प्रदर्शन करने तथा धरना देने वालों पर पुलिस द्वारा किये गये दमन की निन्दा करते हुये प्रस्ताव स्वीकृत किया गया।

प्रस्ताव में कहा गया है कि— गत ११ मई को विधान सभा भवन पर घेरा डालने वालों पर पुलिस ने बेरहमी से लाठी चार्ज किया, आसू गैस का प्रयोग किया और होश पाइप से पानी छोड़ा। इसके अलावे प्रदर्शनकारियों को घसीटा और पीटा गया। ये सारी कार्यवाई कांग्रेस मन्त्रियों की उपस्थित और उनके आदेश से हुई। इससे स्पष्ट है कि कांग्रेस सरकार जनता की मांगों को दवाने के लिये दमन का फासिस्ट तरीका अख्तियार कर रही है। सरकार प्रदर्शनकारियों की बदनाम करने और अपने का औचित्य साबित करने के लिये झूठी और गन्दी कहानिया गढ़ रही है परन्तु उत्तर प्रदेश की प्रस्त जनता सरकार के इस खोले में नहीं आने वाली है। वह लगान पर बड़े अधिभार भवन भूति कर समाप्त कराने तथा अपनी मांगों को पूरा कराने के लिये जबर-दस्त प्रतिरोध आन्दोलन खड़ा करेगी।

कम्युनिस्ट पार्टी के उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री शिवकुमार मिश्र केन्द्रीय क्रमेटी के सदस्य श्री शंकर दयाल तिवारी वाराणसी जिला क्रमेटी के

काशी, १३ मई। जीवन बीमा निगम कर्मचारी संघ के महामन्त्री श्रीराम जी राम ने एक प्रेस वक्तव्य में कहा है कि गोखपुर, देवरिया, बस्ती, आजमगढ़, गाजीपुर, मिर्जापुर, बलिया, जौनपुर और ताराणसी जिलों के जीवन बीमा निगम के कर्मचारी गत ७ मई से निगम के सेन्द्रल जोन के जोनल मैनेजर श्री आर० सी० भरुजा के कर्मचारी विरोधी रवैद्ये के विरुद्ध अपने कार्यालयों के समक्ष विराट प्रदर्शन कर रहे हैं यह प्रदर्शन सेन्द्रल जोन बीमा कर्मचारी संघ के आवाहन पर मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश के अन्य शहरों में भी किये जा रहे हैं।

स्मरण रहे कि, जीवन बीमा निगम में आगामी १६ तारीख से पदोन्नति की परीक्षा लेने का निश्चय किया। परीक्षा के लिए पुस्तकें देने की जवाब देही निगम की ही है लेकिन जब की परीक्षा के लिये बहुत कम समय रह गया है अभी तक पुस्तकें नहीं मिल पाई है इससे कर्मचारी बहुत चिन्तित है कि उन्हें पढ़ने का कुछ समय नहीं मिल रहा है कर्मचारियों की यह समस्याएं जब जोनल मैनेजर के समक्ष लाई गयी तो उन्होंने संघ के प्रतिनिधियों से कहा कि पुस्तकें पहले ही दे दी गयीं हैं। जब कि वे वहीं बक्सों में बन्द थीं। इस तथ्य को उनके समक्ष लाने पर उन्होंने कुछ सुनने से साफ इनकार कर दिया। उनके ऐसे व्यवहार के विरोध में कर्मचारियों की आम सभाएं आयोजित कर प्रस्ताव पारित किये गये और उच्चाधिकारियों से इस विषय की जांच कराने और

तथा बाहर के संत आने की सम्भावना

२५ मई को पंचांग वैश्व तथा २६ मई न अग्नि-स्थापन प्रतिदिन प्रातः ८ तथा ६ बजे से ५ होगी। २ जून को एवं अवमृत स्नान सर से मक्त जनता चाहिए। इस पाठ, भीमदमागवत, आदि का पारायण माओं के उपदेश न किया गया है।

दिवस के

बैठक में

बलियाक
स्पताल की
गय

व'
शिकायत पत्र
गया है, कृपा
करें—

हिला मुख्यमन्त्री
द के साथ कहना
सा सदर अस्पताल
डाक्टर गत दो
जिसके परिणाम
हेलाओं को अपनी
इती है। मरीज
य डाक्टरों द्वारा
देवाजीकी जाता है।
अस्पतालमें देवा,
इई व्यवस्था मरीजों
यह सभी चीजें
गायी जाती हैं।
ता है और कर्म-

पत्र करते
का जीवन न
र हो गया है
न में देह (शैय,
साथ ही जो
और लज्जर अवस्था
राव्य ही यहाँ
लिये मरीजों को

यत्र द्वारा मह
व की मांग कर
अस्पताल के
गविलम्य नियुक्ति
इस पर
कर मरीजों की
प्राया
मदास प्रसाद
कार्यकर्ता
ट पार्टी, बलिया

ते के लिये अलग आश्रय भी बहुत है, यदि मुझ अनाथ को अपना
पहुँके लाड़िलों ने थोड़ी भी अनुकम्पा की तो भवसागरसे उद्धार होना
कह नहीं। क्योंकि उनका प्राणनायक स्पष्ट अक्षरों में सूचित कर रहा
"भक्त पराधीन" अर्थात् मैं परम भक्तों के आधीन हूँ। जिनने मेरे हृदय
विराजमान होकर अपना नाम और भाव अङ्कित कराया है। मुझे
कि वे अवश्य परम भक्त हैं। और "शास्त्रयोनित्वात्" मालूम
कि त्रिभुवन भवन विहारी श्रीरामामाधव भगवान् उनके आधीन
सार सिन्धु से तर जाने की चिन्ता व्यर्थ है, वे स्वयं ही मुझ कुटिल
खरण रज देकर तार देंगे।

१ "श्रीरसिक भक्तमाल" के मक्षर जोड़ने में सहायक रसनिधि
लालजी तथा पं० कृष्णचट्टनभजी व समाज मुखिया साधु गोपालदास
महोदयों का मैं चिर कृतज्ञ हूँ।

२ ग्रन्थ सारस्वत कुलोद्भि कौस्तुभ पं० श्रीवसन्तरामजी महाराज
सब सन्तुलक में प्रकाशित किया गया है। क्योंकि आपकी श्रीभक्त
प्रत्यक्ष अभिरुचि थी इतना ही नहीं बल्कि आपका जीवन ही
ल पर निर्भर था उपदेश मैं भी यही कहते कि:-"भक्तवृन्दों की कथा
भिलाषा प्रीति करो जिससे श्रीभगवदनुराग और सर्व प्रकार से
लगाएँ" इसीसे उनका सम्बन्ध इस "रसिक भक्तमाल" में आवश्यक था
थ २ उनके उत्तराधिकारी वैष्णव श्रीश्यामसनेही श्रीश्यामाशरणजी को
यथाव है जिन्होंने उनका मार्ग प्रचलित और प्रसिद्ध किया है।

प्रणय—सन्त अनन्त लसन्त गुण श्रीवसन्त परिद्धत प्रवर
गोपेश्वरी स्वरूप केलि माधुर्य उजागर
नित्य अनन्य उपास आत्म विश्वास प्रमाकर
श्यामा श्याम विनोद अन्तरङ्गी सुख आगर
"श्रीकृष्णोदन" मांझ भरघो गागर में सागर
सारस्वत विजयर्षि धनि रसिक मण्डली कलाधर

निवेदक—

यमुनावल्लभ गोस्वामी

धीवृन्दावन।

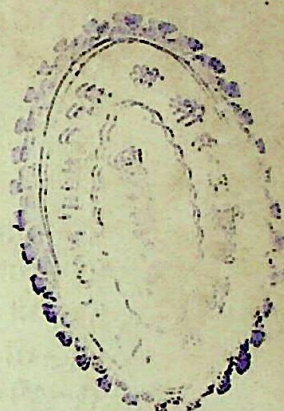
मैं श्रीमन्त्र चित

श्रीराधामाधवोविजयते ।

श्रीरसिकभक्त नामावली *

आद्याचार्याः ।

प्रथम ब्रह्म रुद्र सनकादि श्री प्रघट भये संसार मुनि
दूजै मध्वाचार्य विष्णु स्वामी निम्बार्क
रामानुज आचार्य परम पावन भक्त तारक
तीजे श्रीगौराङ्ग वल्लभाचार्य भट्ट घर
रामानन्द श्रमन्द राधिकाकृष्ण कृपाधर
स्तुः सत्प्रदायी भयं कलि मल के नाशक सु पुनि



- | | |
|-------------------------------|-------------------------------|
| १—श्रीजयदेव गोस्वामि प्रभुः | २३—श्रीसंवर्यणदासजी |
| २—श्रीबल्लभाचार्य महाप्रभुः | २४—श्रीस्वामी रङ्गाचार्यः |
| ३—श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुः | २५—श्रीललितकिशोरीसाह |
| ४—श्रीरामानन्द गोस्वामी | २६—श्रीनन्दकिशोर गोस्वामी |
| ५—श्रीभट्टजी महाराज | २७—श्रीनन्दकुमारजी भट्ट |
| ६—श्रीहरिधंश गोस्वामी | २८—श्रीदेवकीनन्दन गोस्वामी |
| ७—श्रीरामराय गोस्वामी | २९—श्रीगोपाललाल गोस्वामी |
| ८—श्रीहरिदास स्वामी | ३०—श्रीनीलमणि गोस्वामि प्रभुः |
| ९—श्रीभट्टगोपाल गोस्वामी | ३१—श्री पं० नृसिंहदासजी |
| १०—श्रीहरिव्यास देवाचार्यः | ३२—श्रीगोविन्दजी महाराज |
| ११—श्रीचन्द्रगोपाल गो० प्रभुः | ३३—श्रीसुदर्शनाचार्यजी |
| १२—श्रीराधिकानाथ गोस्वामी | ३४—श्रीतुकाराम खानदेवजी |
| १३—श्रीनानक गुरुः | ३५—श्रीभगवानमिश्रजी |
| १४—श्रीभूषदासजी | ३६—श्रीबालकृष्ण शास्त्री |
| १५—श्रीप्रसन्न मोहनराजा | ३७—श्रीजगदीशदास. बाबा |
| १६—श्रीप्रहारीलाल कविः | ३८—श्री राजा. दामोदरदासजी |
| १७—श्रीमोहनीदासजी | ३९—श्रीलक्ष्मीचन्द्रसेठ |
| १८—श्रीभगवत्तरसिकजी | ४०—श्रीतपस्वीदासजी |
| १९—श्रीनन्दचरीशरणीजी | ४१—श्रीश्यामदासजी |
| २०—श्रीमुन्शीनवलकिशोरजी | ४२—श्रीदामोदरदासजी |
| २१—श्रीछज्जु भगतजी | ४३—श्रीहाराज के |
| २२—श्रीलाखाबाबा सिद्धः | ४४—कं उपलक्ष में |

शत ।



- ४५—श्रीजपराधे सिद्धजी
 ४६—श्रीरामरत्नदासजी
 ४७—श्री गो० यमुनादासजी
 ४८—श्रीजपराधे बाबाजी
 ४९—श्रीनारायण स्वामीजी
 ५०—श्रीपरमहंस गोकुलबारे
 ५१—श्रीपरमहंस हंडियावाले
 ५२—श्रीरणछोरादासजी
 ५३—श्रीगोपालदास खत्री
 ५४—श्री गो० प्रेमानन्दजी
 ५५—श्री गो० चन्द्रलालजी
 ५६—श्री गो० प्रेमलालजी
 ५७—श्रीगंडाभक्तजी
 ५८—श्रीगोकुलमिश्रजी
 ५९—श्रीगौराङ्गदासजी
 ६०—श्रीवृन्दावनदासजी
 ६१—श्रीहीरादासजी
 ६२—श्रीसुदर्शनदासजी
 ६३—श्रीस्वामि शरणजी
 ६४—श्री गो० नारायणजी
 ६५—श्री गो० शुकदेवजी
 ६६—श्री पं० केशवदेवजी
 ६७—श्री गो० लाङ्गिलीप्रसादजी
 ६८—,, मधुसूदन शरणजी
 ६९—,, दुर्गादत्त शास्त्री
 ७०—,, मधुसूदन गोस्वामी
 ७१—,, गो० सधाचरणजी
 ७२—,, जयकृष्णदासजी
 ७३—,, रामदासजी काटिया
 ७४—,, चनमालीरामजी
 ७५—,, मधुसूदनदासजी
 यमुनाबाई

- ७८—श्रीगोपेश्वरशरणजी
 ७९—,, प्रियादासजी
 ८०—,, अभयरामजी
 ८१—,, वसन्तरामजी
 ८२—,, भल्लामहजी
 ८३—,, कुसुमहरनाथजी
 ८४—,, गो० चनमालीलालजी
 ८५—,, पं० प्यारेलाल भल्लास्वामि
 ८६—,, गो० गोवर्द्धलालजी
 ८७—,, हरिप्रियादासजी
 ८८—,, पं० रामकृष्णदासजी
 ८९—,, रासदासबाबाजी
 ९०—,, गो० प्राणगोपालजी
 ९१—,, राजा विश्वनाथसिंहजी
 ९२—,, राजा बलदेवदास बिड़ला
 ९३—,, राजा कमलेश्वरीप्रसादजी
 ९४—,, गो० जुगलकिशोरजी
 ९५—,, गो० गोकुलनाथजी
 ९६—,, अनन्ताचार्यजी
 ९७—,, गो० मधुसूदनलालजी
 ९८—,, रायचन्द्रहारबलीजी
 ९९—,, रामवल्लभाशरणजी
 १००—,, वनारसीप्रसादजी
 १०१—,, कृष्णदेवदासजी
 १०२—,, ब्रजलालजी रसिक
 १०३—,, गो० रघुनाथप्रभु
 १०४—,, चैतन्यभक्तप्रभु
 १०५—,, रसिकोत्तमजी
 १०६—,, मणीन्द्रचन्द्र मण्डो
 १०७—,, कलिताराधनाजी
 १०८—,, हरहर प्रभु
 १०९—,, फलस्तुति
 ११०—,, ॐ प्रार्थना ॐ

स्याल के
 म्य नियुक्ति
 म इस पर
 मरीजी की
 प्राया
 म प्रसाद
 र्यकर्ता

मैं श्रीमत्. वि.



❀ श्री चैतन्यग्रन्थमाला का द्वादशवां पुष्प ❀

❀ श्री मत्सारस्वत कुलाब्धि कौस्तुभ ❀



श्रीगोपीश्वरी कृपा प्रेयसी स्वरूप

श्रीवसन्तगमजी महाराज के

शुभ जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में

प्रकाशित ।



॥ श्रीरसिक भक्तमाल ॥

❧ श्रीराधामाधवजी ❧

श्री राधामाधव चन्द्र गोपाल ।
श्री वृन्दावन नित्य रसाल ॥



षट्-शृंगल कफल भुज द्वै गलवाहीं । टेक
विहरत फेफड़िभुज नीके दीके सुभग सुवाहीं ॥ २

आनन्दकन्द अमन्द चन्द्रमा कोटि शरद विधुभाहीं । ३
रास विलास हेतु कुंजन में कंज पुंज भमराहीं ॥ ४

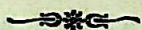
फनकलता मिलि श्याम तमालहिं विचकित धर प्रभुतांहीं । ५
श्रीरामराय प्रभु राधामाधव यमुना कूल कल्पतरु छांहीं ॥ ६

श्रीचैतन्य ग्रन्थ माला का द्वादशवां पुष्प—
अथ

६४
१२५

❀ श्रीरसिक भक्तमाला ❀

प्रारम्भ ।



* मङ्गलाचरण *

जय राधामाधव शुक्रदेव ।

जय बृन्दावन जय जयदेव ॥

राधा माधव चन्द्रगोपाल ।

श्रीबृन्दावन नित्यरसाल ॥

दोहा ।

श्रीराधामाधव जुगल, मञ्जुल रस अवतार ।

प्रेम पुलकि अपने जनहि, लेहु नाथ अवतार ॥

श्रीचैतन्य महाप्रभो, श्रीप्रभु नित्यानन्द ।

ब्रह्म मध्व मिल जीवकों, दीजै नित्यानन्द ॥

राम राय गोस्वामि प्रभु, रूप विशाखा वाल ।

चित्रा चन्द्रगोपाल प्रभु, मिलि मोहि करहु निहाल ॥

द्वापर त्रेता सत्ययुग, कलियुग के सब भक्त ।

चरण शरण मोहि दीजिये, लोकाचार विभक्त ॥

भक्तमाल सर्वस्व मम, अरु तिन चरित विशाल ।

पढ़त सुनत, जो जीवकों, दै रस भक्ति रसाल ॥

❀ श्रीजयदेव गोस्वामी ❀ (१)

गोस्वामी जयदेव प्रभु ब्राह्मण विबुध समाज विधु ।
 श्री;राधोमाधव पादपद्म सेवी निशि वासर ।
 लगे तिनहैं वहिरंग विषय छिन छिन कल्पान्तर ॥
 सरस गीत गोविन्द ग्रन्थ अद्भुत प्रघटायौ ।
 मानौ रसिकन हेत अमल रस सिन्धु बहायौ ॥
 जामधि गोता लेत ही मिलें जुगल माधुर्य मधु ॥गी०

❀ श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुः ❀ (२)

श्री,वल्लभाचार्य महाप्रभु प्रघट अघट लोक उद्धारहित
 गुर्जर जर्जर भक्ति वोर बात्सल्य सुधानिधि
 गोवर्द्धन श्रीनाथ प्रेम रस पुष्टि महाविधि
 ब्रजयात्रा प्रघटाय अनेकन बैठक कीनी
 ठौर ठौर सप्ताह भागवत रास प्रबीनी
 मंत्र-श्रीकृष्णशरणां मम-श्रीविष्णुस्वामि विशुद्धव्रत,श्री०

❀ श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुः ❀ (३)

श्रीप्रभु नित्यानन्द धनि श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु
 गौड़ देश पाखण्डखण्ड भक्ती रस वारे
 करुणा सिन्धु सुभक्त बन्धु भावनतन गोरे
 कलिपावन अवतार महतजन चरन उपासे
 नाम लेत निष्पाप करत सब दुरित विनासे
 दशौ दिशा निस्तार हित प्रघटें लै संग नित्यविभु

❀ श्रीरामानन्द स्वामी ❀ (४)

श्रीरघुनन्दन सप्त अपर श्रीरामानन्द सेतू रच्यौ
सग जग तारन तरन शिष्यगन भये अनेकन
सर्वानन्द अनन्त आदि सुर सुर अनुवर्णन
बहुत समय वपुधारि प्रणत शरणागतपोषी
भवसागर तर हेत सन्त जन मन सन्तोषी
श्रीरामानुज सम्प्रदा सरस जुगलरस जिन जच्यौ

❀ श्रीभट्टजी महाराज ❀ (५)

रसिक सुभट श्रीभट अघट प्रघट लोक उद्धारहित
मधुर भावयुत मंजु ललितलीला विस्तारी
दर्शित पुलकित चित्त काव्य रस वर्षा कारी
जग सन्तारण हेतु सुदृढ़ रति सवहिन दीनी
यश मयंक जेहि हरत सर्व तम अमभ्रम वीनी
नन्द नंदन वृषभानुजा मग्न भजन रस सार वित

❀ श्रीहितहरिवंश गोस्वामी ❀ (६)

गोस्वामी हरिवंश हित भजन रीति अविरल सुगति
श्री-राधावल्लभलाल सदा मन मंदिर धारै
बित्यकुञ्ज की केलि सरस सेवा सुख सारै
सुन्दर महाप्रसाद मान निज सर्वस पामै
विधि निषेध सबत्याग उपासन दृढ़ता भामै
व्यास सूनु मारग चलै जानत तिनहीं की जुमति

❀ श्रीरामराय गोस्वामी ❀ (७)

सारस्वत द्विज कुल कमल श्रीरामराय गोस्वामि प्रभु
 त्यागि लवपुरी वास रहे गोवर्द्धन गिरितट
 वनविहार राधि काकुंड गोविन्द वंशोवट
 प्रेम पन्थ पीयूष पान करि प्राशन पोरैं
 श्रीवृन्दावन सन्त साधु सेवा परिचारैं
 श्रीराधामाधव शरण गौर गोपाल तनूज विभु

❀ श्रीहरिदास स्वामी ❀ (८)

रसिका चारज रस उदधि श्रीस्वामी हरिदासजय
 आशुधीर उदयोत रसिक वर छाप प्रशंसी
 गान कला में मुख्य श्याम श्यामा के अंशी
 मर्कट मीन मयूर आदि पोषत रस दीयें
 जुगल नोम सन नैम कुंज केली रस पीयें
 केलि माल प्रघटत भई जिनके हृदय प्रकाश मय

❀ श्रीभट्ट गोपाल गोस्वामी ❀ (९)

श्रीगोपालभट्ट राधारमण विद्याभूषण भक्तवर ।
 रूप, सनातन, जीव, प्रबोधानन्द, सरस्वति ।
 कृष्णदास कविराज रायरामानन्द संमति ॥
 विल्वमङ्गल कवि कर्णापूर नरहरि हरिदासा ।
 श्रीनिवास स्थुनाथदास हरिराम सुव्यासा ॥
 श्रीश्यामानन्द नरोत्तम मधू वल्लभरसिक कृपा सुघर

❀ श्रीहरिव्यासदेवाचार्य ❀ (१०)

श्रीहरिमजन प्रकाश श्रीहरिव्यास वानी विमल

सुर नर वड़ आश्चर्य दर्ई देवी कों दीक्षा

महावानी रस सार प्रगट कीयौ निज इच्छा

संग सन्तन के वृन्द श्याम श्यामा रससाने

मनु योगेश्वर मध्य भूप वैदेह समाने

श्रीप्रभु भट्ट पदाब्ज रत सकल सृष्टि में अधिक बल

❀ गो० श्रीचन्द्रगोपाल प्रभुः ❀ (११)

श्री-चन्द्रगोपाल चित्रासखी रसिकाचारज रस उदधि

मध्व सम्प्रदामध्य आदिवाणी प्रघटाई

सप्तम पीठाधीश कृष्ण संग श्रीवन आई

सेवित श्रीजयदेव राधिका माधव पाये

वंशीवट वसिग्रंथ भाष्य आदिक रचिगाये

सारस्वत गोस्वामि प्रभु त्यागे सकल निषेध विधि

❀ गोस्वामी श्रीराधिकानाथजी ❀ (१२)

श्रीप्रभु राधिकानाथ श्रीराधामाधव रस पियौ

जुगल भावना कुञ्ज केलि सर्वस सुख मानै

जगत त्याग अनुराग प्रिया प्रीतम पद जानै

वानी रस सौं सान लोक हित प्रेम प्रकाशो

पितुकृत ग्रन्थ प्रबंध रची टीका चौराशी

श्रीचैतन्य महाप्रभो दरश हरष मानस कियौ

❀ श्रीनानक गुरुः ❀ (१३)

श्रीनानक, गुरु-गोविन्दसिंह, चरणदास, वंशी अली,
दादूराम, मलूकदास, रसखान, नागरी,
नामा, तुलसी, प्रियादास, सुमुकुन्दमुरारी,
मीरा, रसिकगोविन्द, विहारनदास, माधुरी,
रूपरसिक, चक्रवर्ति, अखाड़े सकल साधुरी
श्रीनिवासाचार्य, अद्वैत प्रभु, सूरदास, पद अंजली

❀ श्रीध्रुवदास जी ❀ (१४)

श्रीहित पद विश्वास ध्रुवदास भक्तभे अतुल ब्रत
राधावल्लभलाल चरणा अनुराग हृदाये
ग्रन्थ अनेक वनाय रसामृत सिंधु बहाये
इन शत वत्सर गये भये चाचा बृन्दावन
जिन रचि वाणी चार लक्ष कोने जनपावन
श्रीहरिवंश हंस परशंस कर सरस पदाम्बुज मधुब्रत

❀ श्रीरसिकमोहनराजा ❀ (१५)

श्रीरसिकमोहन राजत रसिक वृन्द मंडली चन्द्रसम
लखि बृन्दावन भाव भावना कुंज उपासी
सेवकवानी रची ध्यान श्रीचन्द्रचौराशी
अटल महल आचार्य चन्द्रगोपाल मनाये
राज्य त्याग वड़भाग राधिकामाधव ग्राये
वानी पटुता हृदय सौं सबकौ नाशत भ्राम्यत

❀ श्रीविहारीलाल कवि: ❀ (१६)

कविराज चक्र चूड़ामणि श्रीविहारीलाल गुण सिंधु मनु
नव रस रस सिंगार सदन साहित्य सुसंमत
ध्वनि लक्षणा लखाय व्यंजना आदि शलंकृत
प्रति दोहा पर महुर वहुर जयसिंहनृप दीनी
जयपुर नगरी करी कृष्ण रससों रंगभीनी
सतसई प्रघट भई चमत्कृत रचित रत्न सम्बन्ध जनु

❀ श्रीमोहनीदास जी ❀ (१७)

रस विकास श्रीमोहिनीदास वाम वृन्दाविपिन
श्रीराधाकुंज विहारि पाद पङ्कज अनुरागी
श्रीस्वामी हरिदास प्रेम रस निधि मति पागी
नृपति अनेकन आय लोभ बहुभाँति जनायौ
करुआ गूदरि राखि त्यागकौ रूप दिखायौ
जिनके ही शुभ नामसों भई विदित टट्टी सवन

❀ श्रीभगवतरसिकजी ❀ (१८)

महा-भागवत विदित श्रीभगवतरसिक अनन्य गति
नित्य विहार निहार तासु वर्णन पुनि कीयौ
वानी ब्रज की विमल अमल काव्यामृत पीयौ
सुन्दर भाषा तासु लगे रसिकन अति प्यारी
सबकौ दें आनन्द आप पावत सुखभारी
श्रीवृन्दावन धाम महि टट्टीस्थान निवास मति

❀ श्रीसहचरीशरणजी ❀ (१९)

श्रीललिता सहचरी पद शरण सहचरीशरणा प्रिय
छप्पै मांभ अरिल्ल सवैया दोहा गाये,
नित नव भाव प्रभाव राव रङ्गन मन भाए
कुञ्जविहारी आस और सब लगहिं दुराशा
तासों छिन २ वढत तिन्हीं दर्शन अभिलाषा
जिनकी वानी रससनी चुभत रसिकवर बृन्द हिय

❀ मुन्शी नवलकिशोर जी ❀ (२०)

मुन्शी नवलकिशोर तन नैन कोर हरि ने करी
त्याग जगत अनुराग भाग वड़ कीरति पाई
नन्दकुमार निहार भावना भक्ति वढाई
मुद्रणा यंत्र स्वतंत्र पुरातन ग्रन्थ प्रकाशे
जिनकौ मिलन दुरूह यतन सों ते अभिलाषे
श्रीलक्ष्मणपुर वास करि प्रेम भक्ति हिय में धरी

❀ श्रीछज्जू भगतजी ❀ (२१)

पञ्चाव प्रान्त लाहौर में श्रीछज्जू भगत प्रसिद्ध अति
जिन मन्दिर वनवाय सर्व सौभाग्य सुधारे
राधागाधव सुखद मूर्ति प्रत्यक्ष पधारे
श्रीवृन्दावनधाम वर्ष प्रति आवत रागी
रामराय गोस्वामि पन्थ सेवा अनुरागी
ब्रजवासिन के रहन कौ चौवारौ कीयौ सुमति

❀ श्रीलाखावावा सिद्ध ❀ (२२)

गौतम ब्राह्मण गण मुकटमणि श्रीलाखावावा लक्षगुण
 श्रीरोधामाधव रास हेतु वंशीवट वासी
 शीश लटन सों भूमि भूमि भारत सुखरासी
 श्रीप्रभु नित्यानन्द शिष्य श्रीरामराय प्रभु
 तिनसों दीक्षा लई नित्य सेवा सेवन विभु
 श्रीगौडेश्वर सम्प्रदा भूप संधिया लखि निपुण

❀ श्रीसंकर्षणदासजी ❀ (२३)

गुण चित्ताकर्षण करण श्री सङ्कर्षणदासजी
 परमहंस गति सिद्ध सर्व ब्रज बीच निवासी
 कुंड राधिका कवहुं २ बृन्दावन भासी
 योग धारणा ध्यान ज्ञान गौरव रससागर
 श्रीमन्नन्दकिशोर चन्द्र गोस्वामि कृपाकर

सकलसृष्टि कल्याण रत शुद्धिवुद्धि माया तजी

❀ श्रीस्वामी रंगाचार्यजी ❀ (२४)

श्रीरंगाचार्य महार्यवर जिन प्रभाव जन मन हरन
 रामानुज संग्रदा महा तप संतत कीयौ
 गोवर्द्धन गिरि गुहा दान विप्रन कों दीयौ
 दैके सत उपदेश रंग मन्दिर वनवायौ
 सेठ सुराधाकृष्ण भक्ति अनुरक्त हृदयौ
 उत्सव सब करिकें प्रघट किये हृश्य तारन तरन

❀ श्रीललितकिशोरीजी साह ❀ (२५)
 साह विदित लक्ष्मणपुरी श्रीललितकिशोरी ललितगति
 श्री वृन्दावनधाम रच्यौ मन्दिर आकाशी
 पायौ सहचरि रूप नित्य की महल खवासी
 रासविहारी दियोरास में दरशन परशन
 केलिकला बहुभांति दिखाई हिय आकर्षन
 रास रसिक जन संग श्रीराधारमण उपास्य मति

❀ गो० श्रीनन्दकिशोरचन्द्रप्रभुः ❀ (२६)
 श्रीनन्दकिशोर प्रभु कौ दियौ दर्श व्यास सुत शुकमुनी
 सात वर्ष की वयस भागवत टीका सानी
 ग्रन्थ अनन्त वनाय पाय रस मञ्जु वानी
 वन विहार की भूमि वगीचा निजु वनिवायो
 तहां रसिक जनजोर कृष्णचरितामृत प्योयो
 गोस्वामी श्रीभागवत शशि छटा और नाहिन सुनी

❀ श्रीनन्दकुमार भट्टजी ❀ (२७)
 श्रीनन्दकुमार उदार मति श्रीपुरुषोत्तम भट्ट सूर्यशशि
 श्रीयुत गट्टूलाल भारत मार्तण्ड कहाये
 गोविन्दवल्लभ भट्ट राम अरुकृष्ण सुहाये
 टीका वक्ता प्रथम दूसरे भाव द्वाये
 तीजे शास्त्र अनेक प्रकाशे और वनाये
 तीन हास्यरस मूर्ति जिन वांची कथा हंसाय हंसि

ॐ गो० श्री देवकीनन्दनाचार्यः ॐ (२८)
 सैवकवन्दन देवकीनन्दन धनि गोस्वामिवर
 कमन कामवन मध्य तपोवल वैभव पाये
 दानवीर गंभीर धीर गुणगण दूरशाधे
 पुष्टिमार्ग आचार्य देव वल्लभ वंशोद्भव
 प्रेम रूप सुअनूप किए आनन्द महोत्सव
 श्रीप्रभु गोकुलचन्द्रमा सेवाभावुक भक्तिसर

ॐ गो० श्रीगोपाललालजी ॐ (२९)
 श्रीगोपाललाल गोस्वामि प्रभु वल्लभवंश विशिष्टव्रत
 श्रीवैकुण्ठ विशेष महात्मन मथुरा गाई
 तहाँ कियौ आवास वासना पुष्टि सुहाई
 सखी भावना विशद कन्हैयालाल गुसाई
 सेवा रस शृंगार करत रसिकन मनभाई
 प्रति वत्सर ब्रजधाम की यात्रा अति अभिराम धृत

ॐ गो० श्री नीलमणि प्रभुः ॐ (३०)
 मणी भागवत सिन्धु के श्रीनीलमणी गोस्वामिवर
 भाषावङ्ग प्रकाश कथा अद्भुत सर साई
 अश्रुधार संपात करत ओता हरषाई
 श्रीगौराङ्ग पदारविन्द रसतत्त्व प्रकाशी
 वैष्णवग्रन्थ विशेष प्रमाणात किय सुखराशी
 श्रीप्रभुपाद विशिष्ट पुनि शङ्क कान्ति उद्भासकर

❀ पं० श्री नृसिंहदासजी ❀ (३१)

श्रीनृसिंहदासजी विबुधविधु लोक हितैषी भक्तवर
 श्री वृन्दावन मध्य करौली कुंज निवासी
 अमित शास्त्र सारज्ञ राधिका कृष्ण उपासी
 विद्यार्थी जो पढ़े भये भगवत रस ज्ञानी
 श्रीशुक केशवदेव सहस्र जिन शिष्य प्रमानी
 विद्यावल परमार्थ सों दीनजनन पर कृपाकर

❀ ब्रह्मचारी श्रीगोविन्दजी ❀ (३२)

श्रीगद्दीस्थ ब्रह्मचारी विदित श्रीगोविंद राजेन्द्र सम
 जयपुर माधव भूप रजोगुण समभक्त न धाये
 ताही छिन गोपाल नाम चेटक परखाये
 परचौ चरणकी शरन नैक आदर नहि कीयो
 निज वैभव दरशाय दीन सेवा में लीयो

श्रीगिरिधारोदास गुरुदीक्षा धर किय यम नियम

❀ श्रीसुदर्शनाचार्यजीशास्त्री ❀ (३३)

श्री सुदर्शनाचार्यजी शास्त्र मार्ग गम्भीर गति
 लोक प्रसिद्ध सुबुद्धि न्याय मार्तण्ड कहाये
 छहौ शास्त्र सिद्धान्त सहज जिन हृदय आये
 शील सनेह समुद्र सरलता सहस्र गाधारी
 श्रीरङ्गेश्वर मन्द्रभये भावुक अधिकारी

श्रीरामानुज सम्प्रदा मुदित मनोज्ञ कुशाग्र मति

❀ श्री तुकाराम ज्ञानदेवजी ❀ (३४)

श्री तुकारामजी वैश्य द्विज ज्ञानदेव टीको रची
महाराष्ट्र गुजरात देश में दुन्दुभि बाजी
कृष्णराम हरिनाम धाम धुनि धरनी गाजी
करि पाखंड परास्त मधुर कीर्तन रस प्यायौ
मनौ भक्त प्रह्लाद अटल ध्रुव पद इन पायौ
श्रीरामदास सेवक प्रथम द्वितीय ज्ञान गीता बची

❀ श्रीभगवान मिश्रजी ❀ (३५)

बिष्णुस्वामी सम्प्रदा श्रीभगवान मिश्र वृन्दाविपिन
श्री हितसुत बनचन्द्र बुलाये पास बसाये
निज सन्तति शिशुवृन्द पढ़ावन हेतु सुहाये
तजिकें बन भांडीर भागवत कथा जु गाई
ज्ञानगूदरो मधि "मलूक" पुस्तक पधराई
चौक विदित श्री राधिका गोपीजन वल्लभ शरन

❀ श्री बालकृष्ण शास्त्रीजी ❀ (३६)

श्री बालकृष्ण शास्त्री विदित शास्त्र दिवाकर दिव्यतन
कर मिर्जापुर बास माधवाचार्य सुदर्शन
शिवकुमार काशेस्थ शास्त्रि ज्वालाप्रसाद जन
सकल पढ़ाये शिष्य भजनरत कथा नेमसौं
श्री निम्बार्क विनोद मोद वैराग्य प्रेमसौं
भक्ति सुधारस को निधि ग्रन्थ रचे जिन अनेकन

❀ श्री जगदीशदासजी ❀ (३७)

श्री जगदीशदास सेवा सघन कियौ बास वृन्दाविपिन
 श्री कालिय हृद घाटवाट तट कुटी बनाई
 हरि गौराङ्ग पदाब्ज सहित सेवे नित्याई
 अति शास्त्रज्ञ सुविज्ञ भावभावित मति भूरी
 तीन लक्ष हरिनाम नित्य सेवा करि पूरी
 कृपा पाय जिनकी सहज भये अनेकन रसिकजन

❀ श्री राजाबाबू दामोदरदासजी ❀ (३८)

राजाबाबू विदित अति श्री दामोदरदास प्रसिद्ध गुण
 कलिकाता सम नगर भक्ति रस सिन्धु बहायौ
 श्री बल्लभकुल मार्ग नियम सेवा सुख पायौ
 श्री सामलिया चरण शरणा मन्दिर जु बनायौ
 निधि कौ तत्त्व विचार प्रेम आनन्द बढ़ायौ
 पुत्र नारायण दामकौ व्रत अनन्य वल्लभ शरण

❀ श्री लक्ष्मीचन्द्रजी सेठ ❀ (३९)

(श्री) लक्ष्मीचन्द्र राधाकृष्ण गोविन्ददास रति रंगपद
 कोटिन की सम्पत्ति सहज हरिहेत लगाई
 दानवीर गम्भीर धीरता अनुपम पाई
 जैन धर्म कू त्याग भये वैष्णव अनुरागी
 श्री वृन्दावन धाम विमल रस में मति घागी
 (श्री) रंगनाथ मन्दिर रचत शिला धरी माथे विमद

❀ श्री तपस्वीदासजी ❀ (४०)

परम मनस्वी यशस्वी श्रेष्ठ तपस्वीदास मुनि
जिन विद्या परमार्थ कियौ श्रीवृन्दावन में
श्रीनिम्बार्क विनोद ध्यान कर ज्ञान भजन में
शिष्यनकों रस भरित भागवत शास्त्र पढ़ायौ
शिष्य दुलारेलाल शास्त्रि सम कर यश पायौ
मन्दिर सुन्दर साहजी बसै सदां सौभाग्य धनि

❀ श्री श्यामदासजी ❀ (४१)

श्री श्यामदास विश्वास मन रसिकन के जीवन सुखद
रास तत्वकौ सार कियौ उद्धार सुघरतर
द्वादश वर्ष सहर्ष बास गिरिराज कुसुमसर
पुनि द्वादश गहमरा कुण्डवासी विद्वद्वर
अरु द्वादश ही वर्ष बास वृन्दावन तरुतर
श्यामकुटी जिन नामसौं विदित निष्ठ निम्बार्क पद

❀ श्री दामोदरदासजी परमहंस ❀ (४२)

परमहंस वैराग्य बल श्री दामोदरदास प्रिय
श्री निम्बार्क पदारविन्द मकरन्द मधुव्रत
रस निधि विष्णुसहस्रनाम शुभ तिलक लोकहित
व्रतकृत वर्ष छतोस श्रीशपद पुनिपय पीयौ
यमुनाजल निज अंश कलश भर सेवा लीयौ
श्री तुलसी तरु मंजरी अगनित हरिपद पदम दिय

❀ श्री गूदरबाबाजी ❀ (४३)

उदरवासना आश तज श्री गूदरबाबा ज्ञान धन
 शान्त सुभाव दुराव भाव चैतन्य भजनमें
 चाव भावना विशद श्यामसुन्दर पद धनमें
 सुन न सकें निज कीर्ति कबहु काहू के मुखसौं
 प्रतिदिन जीवन रसिक नाम गुन गामें सुखसौं
 परमप्रीति श्री राधिका पद सरोज सौभाग्य तन

❀ श्री गोपालदासजी ❀ (४४)

(श्री)गोपालदासजी विबुधविधु भक्तशिरोमणि रम उदधि
 श्री निम्बार्क पदाब्ज छटा हियमें परकाशी
 जन्मोत्सव आजन्म कियौ जिन कार्तिकमासो
 रास भागवत पाठ भावना भावित कीये
 मिल बहु सन्तन संग रसामृत अविरल पीये
 श्री हंसदास सम शिष्य जिन नृपतिभवानी सिंह सुधि

❀ श्री जपराधे सिद्धजी ❀ (४५)

श्री जपराधे सिद्धगति तजी जगत सम्पद् विपद्
 श्री यमुना तट वाट अंधेरो घाट सुहायौ
 निर्जन ताकों जान निवसि तंह हर्ष मनोयौ
 निशा समयमें मन्द शब्द कर भिक्षा मांगें
 परमहंस तज वस्त्र श्याम श्यामा अनुरागें
 अष्टसिद्धि नवनिद्धि कों त्यागि भजें इक प्रियापद

५५
१२५

❀ श्री रामरत्नदासजी ❀ (४६)
मिथिला रस निधि रत्न श्री रामरत्न सेवत महल
ब्रजचौरासी निरखि नित्य नवकुंज वृन्दावन
जुगल भावना मत्त छके छवि रास बिहारन
गुण गरिमा गंभीर धीर निम्बार्क पदाश्रित
श्री गुरु परशीदास पाद अरविन्द मधु व्रत
गोपालदास निज शिष्यकों करि करुणा दीनी टहल

❀ श्री यमुनादासजी गोस्वामी ❀ (४७)
गोस्वामी श्री यमुनादास जू भावलपुर गद्दीस्थ वर
श्री वल्लभ आचार्य प्रशंसा करत प्रसंशित
मुनि हंसन सम रूप भावना भाव अलंकृत
कर पाञ्चाल पवित्र विविध पाखण्ड मिटाये
कृष्ण केलि रसतत्त्व भक्ति अनुराग द्वाढाये
कियौ नित्य संकीर्तन रचि रचि नव नव पद सुधर

❀ श्री जपराधे बाबाजी ❀ (४८)
(श्री) प्रियापूज्य हित मार्ग (श्री) जपराधे अतिरसिकवर
अष्टयाम सुखधाम भावना भाव उपासी
एक वस्त्र कौपीन पीन वपु प्रेम प्रकाशी
आज्ञा श्री मुग्व प्रिया अटल वृन्दावनवासी
सदां मगन मनमांहि भक्ति धन सब रस राशी
धरि अनन्यव्रत हृदय मधि गये कुंज कहते धरर



❀ श्रीनारायण स्वामीजी ❀ (४९)

निर्गुण तज वृन्दाविपिन (श्री) नारायण सेवे सगुण
 श्री निम्बार्क कृपालु पाद रज आश्रय लीयौ
 ताके फलमें सरस कृष्ण कविता रस पीयौ
 ब्रजबिहार हियहार ग्रन्थ जिन रच्यौ विचक्षण
 तामें रस अनुराग भर्यौ अत्यन्त विलक्षणा
 श्री रासबिहारी की कृपा पायौ रस सर्वस वरणा

❀ श्री परमहंसजी गोकुलवारे ❀ (५०)

अन्य हंस की कहा कथा श्री परमहंसजी परमगति
 श्री गोकुल गोपाल घाट तट आसन कीयौ
 तजकें जगकौ स्वार्थ अर्थ श्री हरिपद लीयौ
 वर्ष तीनसौ वयस सुयस जिनकौ अति छायौ
 श्री गोपाल कृपाल प्रीति रस मोरग पायौ
 अमित जीव उद्धार करि सुख समाधि में लीन मति

❀ श्री परमहंसजी हंडियावारे ❀ (५१)

हंडियावारे विदित जग श्री परमहंसजी भक्तवर
 नन्दराम उद्यान धाम वृन्दावन अन्तर
 व्रत अनन्य संकेत चेतनासौ धर सुन्दर
 त्याग्यौ नहि स्थान कबहु बिन तनके त्यागें
 बैठ भाव की कुंज मंजु रसकौ अनुरागें
 करामात अति धारिकें हंडियासौ सब पूर्ति कर

❀ श्री रणछोरदासजी ❀ (५२)

(श्री)रणछोरदासजी आस अति अमित करी निम्बार्कपद
गहवर बन अति सघन मगनमन तहां निवासी
श्री बरषाने गोम प्रिया को करत खवासी
अटल प्रवल विश्वास भक्ति भाबुक सुखराशी
पुरुषसिंह सम भाव सार सिद्धान्त प्रकाशी
दर्श दिये साक्षात जिन श्री लाड़िली अनल्प मुद

❀ श्री गोपालदासजी खत्री ❀ (५३)

गोपालदास गोपाल भज पायौ रस वृन्दाविपिन
खत्री वंश प्रशंस कृष्णगोविन्द उपासी
श्री गौराङ्ग प्रताप भये अद्भुत गुण राशी
वाणी भाबुक कुशल विमल वै शिष्ट गृहासन
श्रीहरि आनन मगन पुत्र जीवनहु विलक्षण
सन्तनकों आनन्द दै गावत कीर्ति प्रसन्न घन

❀ गो० श्री प्रेमानन्दजी ❀ (५४)

रसानन्द अनिन्द घन (श्री) प्रेमानन्द अमन्द गत
श्री प्रभु नित्यानन्द वंश अवतंश प्रशंसी
गौरचन्द्र पद गूढभाव रस सर मति हंसो
नित्यविहार अहार निरन्तर सहचरि भावा
नित्य कुंज की केलि लतातरु संग मिल गावा
बास मुखद शृंगारवट निकट यमी के तट सुव्रत

❀ गो० श्री चन्द्रलालजी ❀ (५५)

श्रीहित सहचरी स्वरूप श्री चन्द्रलाल गोस्वामिवर
नव निकुंज अलिपुंज मंजु निजु भाव विभावित
राधावल्लभलाल लाड़िली लाड़ लड़ावत
प्रति उत्सव सुखराशि चरन अधिकार दूढावत
हर्षित चितवित सहज प्रिया प्रीतम सरसावत
पुत्र मनोहरलाल अरु परमानन्द आनन्द कर

❀ श्री प्रेमलाल गोस्वामी ❀ (५६)

(श्री) राधावल्लभलाल बल (श्री) प्रेमलाल गोस्वामिवर
श्री वृन्दावन धाम हंस हरिवंश वंशधर
कुंज केलि रसभाव भावना सेवी सुन्दर
निज उत्सव द्विज आदि श्रवण पर्यन्तहु तोषे
भेद द्वष्टि लखि लोक कूपकर पृथक् जु पोषे
दोय समय अस कार्य कर विप्रवृन्द सेवा सुघर

❀ श्री गंडाभक्तजी ❀ (५७)

सर्व साधु अनुरक्त श्री गंडाभक्त प्रसिद्ध व्रत
त्याग्यौ अमृतशहर बास वृन्दावन कीयौ
कर सम्प्रति ग्रदान मान श्री हरिपद लीयौ
श्री गोपाल पदाब्ज भक्ति अति बांकी कीनो
अति उदार संसार वासना हृदय न लीनी
कर सभीकौ समादर विद्यार्थिन हित क्षेत्र नित

❀ श्री गोकुल मिश्रजी ❀ (५८)

गौड़ विप्रकुल कमल श्री गोकुल मिश्र प्रसिद्ध व्रत
अध्व साध्व शुभ माध्व सम्प्रदायी विद्वद्धर
ऊंचौ ग्राम विहाय बसे वृन्दावन तरु तर
टीका करिके ग्रन्थ अनेकन हीं उड्डारे
श्री राधा गोपाल लाल कारुण्य सहारे
श्रीरामनारायण मिश्र अरु श्रीकिशोर तिन वंशधृत

❀ श्री गौराङ्गदासजी ❀ (५९)

(श्री) गौराङ्गदास श्रीराधिका पद कीनी अड्डा प्रवल
गये द्वारिका धाम गाम तजकें रनवारी
दरश न दीयौ तहां ध्यान में राधा प्यारी
लखि वियोग इक पांव धार धरनी के ऊपर
ठाड़े ह्वे बाईस बिताये जिन निशवासर

चले धाम गोलोक जब प्रगटी दक्षिण पद अनल

❀ श्री वृन्दावनदासजी ❀ (६०)

श्रीवृन्दावनदासजी व्रज निवास आनन्द घन
कोले ग्राम प्रसिद्ध कियौ विश्राम सुहावन
वर्ष डेढ़सौ वयस मुग्धमति रहैं भजन धन
सदां दृष्टि में बसैं राधिका माधव निश दिन
वाक्य सिद्ध अति विदित बाल सम बुद्धिरूप तन
श्री रामराय गोस्वामि पथ कृष्णचैतन्य कृपा सदन

❀ श्री हीरादासजी ❀ (६१)

हरिहीरा परख्यौ हरसि श्री हीरादास अनन्त गुन
गहवर बनमधि ललितकुंड तट आसन दीयौ
श्री लाड़िली पदाब्ज प्रीति अद्भुत रस पीयो
सिद्धि देखि बहुभांति विरोधी भये कुसाधू
दीनी अग्निलगाय पाद ब्रजबास विवाधू
कष्टपाय अति अधिकतन भयौ चित्त नैक न मलिन

❀ श्री सुदर्शनदासजी ❀ (६२)

सुभग सुदर्शनदासजी साधुवृन्द सेवी सरल
मन्दिर लीयौ बास आस श्री रसिकबिहारी
भाव भावना लीन रास छवि नित्य निहारी
ग्रन्थ अनेक बनाय रसिकजन आशापूरी
गोपीशरणा जगवंश राय प्रिय शिष्यनु सूरि
श्री निकुंज दर्पण रच्यौ प्रेमसिन्धु रसनिधि विमल

❀ श्री स्वामीशरणजी ❀ (६३)

श्री श्री स्वामीशरणजी सन्त सेव्य सद्गुण सदन
स्वामी श्रीहरिदास चरणा रजके अभिलाषी
व्रत अनन्य जागरण गूढ कर्तव्य प्रकाशी
गीता पाठ विचार धारणा वाह्य दिखाई
अन्तर रसकी केलि शिष्यजन हृदय जनाई
शिष्य अमोलकराम अरु दास नवेली रस मगन

❀ श्री नारायण गोस्वामी ❀ (६४)
 गुण चित्ताकर्षण करण श्रीनारायण गोस्वामि प्रभु
 परमहंस सम वृत्ति गृहस्थाश्रम सारस्वत
 सेवा श्रीशुकदेव व्यास सुत इष्ट भागवत
 नित्य नियम सप्ताह पाठ कंठस्थ जु गामें
 गोवर्द्धन करि परिक्रमा वृन्दावन आमें
 एक रात दिनमें करत सकल भागवत पाठ विभु

❀ गो० श्री शुकदेवजी ❀ (६५)
 श्रीशुक बासुदेव वंशी नवल मुरलीधर यह भ्रात सब
 वृन्दारण्य निवास राधिका माधव आशा
 गौड़ेश्वर आचार्य वंश प्रभु तजी दुराशा
 सेवक शिष्य अनेक भागवत तिन्हें सुनामें
 कौन कही को कहै कथा जैसी कह गामें
 श्रीब्रजकिशोर गोस्वामि सुत श्रीशुक मुनि सेवा परव
 ❀ पं० श्री केशवदेवजी ❀ (६६)

श्री केशवशरणा श्यामलाल मदनलाल गंभीर गति
 प्रथम कथा मृदु कहन भागवतभूषण गाये
 हूजे पटुता पुंज वैद्य मार्तण्ड कहाये
 तीजेन भाषा वंग रंग रसना रस पाये
 सेवत चन्द्रगोपाललाल गुण बृन्द बढ़ाये
 श्रीचुन्नी वैद्य तनूज द्विज सारस्वत निम्बार्क मति

❀ गो० श्री लाड़िलीप्रसादजी ❀ (६७)

अलंकार चूड़ामणी श्री लाड़िलीदास नव नागरी
सारस्वत द्विज रत्न यत्नसौं शास्त्र निहारे
नीलकंठ जगदीश बन्धुवर कृपा सहारे
घनानन्द प्रभु पौत्र बिहारी पद अनुरागे
गोस्वामी कुल जन्म धन्य कीरति बड़भागे
प्रभावतीपरिणय, सरस सांगीतविन्दु, रचनाकरी

❀ श्री मधुसूदनशरणजी ❀ (६८)

श्री मधुसूदनशरणजी आचारज वाणी गही
ब्रह्मसूत्र वेदान्त सन्त सिद्धान्त प्रकाशे
हंस नृत्यगोपाल राधिका चरणा उपासे
मन्दिर सुन्दर सुखद साधु सेवाहित कीयौ
श्री निम्बार्क पदाब्ज प्रेम मय आश्रय लीयौ
देव मनोहरशरणा गुरु बड़मान नृप सम सही

❀ श्री दुर्गादत्तजी शास्त्री ❀ (६९)

(श्री)शास्त्री दुर्गादत्त द्विज करी भक्ति गोपाल पद
रायौ ग्राम बिहाय भए बृन्दावनवासी
घटिका शतक प्रसिद्ध सिद्ध अद्भुत रसराशी
श्रीहरिदम्पति छटा घटा जिन प्रकट प्रकाशी
श्रीगोपाल सहस्रनाम कीरति विश्वासी
जिन अष्टोत्तर शतसहित रचे ग्रन्थ लघु अरुविशद

❀ श्री मधुसूदन गोस्वामी ❀ (७०)
 सार्वभौम आचार्य श्री मधुसूदन वृन्दाविपिन
 सद्गुण राधारमण चरण रति दृढता कीनी
 शास्त्रोति कृत प्रीति योग साधनविधि लीनी
 ग्रन्थ अनेक बनाय शिष्य सेवक जन हेतू
 भवनिधि तारन तरन माध्व गौड़ेश्वर सेतू
 सुत श्री राधाकृष्ण श्री कृष्णचैतन्य गोस्वामि धन

❀ श्री राधाचरण गोस्वामी ❀ (७१)
 गोस्वामी (श्री) राधाचरण शरण राधिकारमण पद
 भक्तमाल रचि संग अनेकन ग्रन्थ बनाये
 जग विद्यावागीश विदित पदवी सरसाये
 भारतेन्दु हरिचन्द्र प्रीतिप्रति गाढ़ी कीनी
 रसिक किशोरीलाल बनारसबास प्रवीनी
 हिन्दी के उद्धारकर षड्भुज श्री महाप्रभु प्रमद

❀ श्री जयकृष्णदास बाबा ❀ (७२)
 श्रीजयकृष्णदास वसि कामवन गुफा मध्यतप किय सुदृढ़
 तीनलक्ष हरिनाम जाप गोविन्द पदाम्बुज
 करिसमर्पि जलपोन एक तुलसीदल संभुज
 श्री गौराङ्ग प्रभाव जगत माया न सताये
 जीवन अवधि अनन्त संत सेवा सुख पाये
 श्री बाबा माधोदास पुनि ध्यान तहां धारे सुदृढ़

❀ श्री रामदासजी काठिया ❀ (७३)

श्री रामदासजी सिद्धगति परमहंस पदवी प्रमुख

कटिधर काठ लंगोट काठिया छाप प्रशंसित

ध्यान धारणा योग आदि यमनियम समन्वित

अन्तरंग वहिरंग रूप द्वय जग परस्वाये

व्रजविदेह मुमहंत हृदय गुणमणिगणछाये

श्री सन्तदास श्री वैष्णवदाम शिष्य विख्यात सुख

❀ श्री बनमालीरायजी ❀ (७४)

श्री बनमालीराय नृप राज्य विभव तृणा सम तजै

श्री वृन्दावन बास सन्त संगति अनुरागे

शास्त्र भागवत तिलक अष्ट परकाश सुभागे

श्री राधिकाविनोद मोद जामाता माने

भक्त कामिनी घोष तोष परमारथ साने

वैष्णववृन्द अनेक संग नित्यस्वरूप प्रभा सजे

❀ श्री मधुसूदनदासजी ❀ (७५)

श्री मधुसूदनदासजी सूर्यकुंड हरिपद भजे

कृष्णादास गोविन्दकुंड व्रतविधि अनुरागे

दूजे साधक कृष्णदास बरषाने जामे

एकरूपसों रहे मानसीगंगा तट पर

तीजे सिद्ध सुकृष्णादास गोवर्द्धन तरुतर

श्री लाडिलीदास खत्री जपे वल्लभपद लौकिक तजे

❀ श्री यमुनाबाई ❀ (७६)

इन बाईन संसार में भक्ति सुधारस सुख पियौ
यमुना के उपदेश टिकारीकुंज बनी शुभ
लक्ष्मीबाई नन्दराम उद्यान सुदुर्लभ
वल्लभकुल मर्याद यशोदाबाई पाई
गोपालो अरु रासरंगीलो अति प्रभुताई
वृन्दावन श्री पूर्णा श्री आनन्दीबाई हियौ

❀ श्री नवेलीदासजी ❀ (७७)

श्री नवेलीदास ललिताशरणा दुखीश्याम रसके भरे
दासमुकुन्द किशोरदास हरिदास सुदामा
बच्चामंडर बालगंगाधर तिलक सुधामा
खेमराज श्री कृष्णादास अरु बाबा उड़िया
चित्रगुप्त कुलचन्द्र कन्हैया बांकेपीया
श्री उम्मेदसिंह मुंशी तथा श्री रघुनन्दन दूसर खरे

❀ श्री गोपेश्वरशरणजी ❀ (७८)

श्री गोपेश्वरशरण श्री निम्बारक आचार्यवर
श्री सर्वेश्वरदास रामगढ़ काशी त्यागे
रामदास मौरंग देश नैपाल नरागे
कृष्णानन्द सुधाम रासलीला करिपाई
गोपीश्वर महादेव निकट मंडली बनाई
श्री बलरामदास पंखा करत त्रिविधतापकों लेत हर

❀ श्री प्रियादासजी ❀ (७९)

श्री प्रियादासकों प्रियापद पीरीपोखर बसि मिले
नन्दगाम के मांहि रहत मौनी डौमनबन
श्रीलक्ष्मीनरसिंह पासमें बसत जु निशदिन
प्रियतमदास निवास सघन वृन्दाबन भायौ
गोबर्द्धन गिरिगुहा बास मौनी मन आयौ
पीलू पत्राहार करि श्री कुंजबिहारी हिय मिले

❀ श्री अभयरामजी ❀ (८०)

अभयराम बसिबगीची सबमें भगवत भाव किय
पढ़ाकर, गोपाल, मिले संग सुधिबुधि खोई
जड़बड़ जीव समस्त दिये कवितानिधि डोई
श्री अनन्त गोस्वामि, चित्र सांक्षी पधराये
गानकला कुलकुशल राधिकावल्लभ ध्याये
सुत अलबेलाल, अरु नबेलाल, आनन्द, हिय

❀ पं० श्री बसन्तरामजी ❀ (८१)

श्रीबसन्तराम तुलसी मनहु पुनि प्रघटे श्रीकृष्णबुधि
सिन्ध हैदराबाद अजन सुखधाम ग्रामजिन
रामायण सम रच्यौ ग्रन्थ श्रीकृष्णायनतिन
दोहा छन्द प्रबन्ध सरल चौपाई गाई
सुन्दर शुभ नवद्वार सात काण्डन समताई
सदाशिवा गोपीश्वरी चित सारस्वत विप्र सुधि

❀ श्री भल्लभट्टजी ❀ (८२)

श्री गदाधरभट्ट कुलकमल श्री भल्लभट्ट अनन्यव्रत
सेवाकीर्तन प्रथापुरातन जन अनुरागी
वंशजकरत समस्त महाप्रभुवल बड़भागी
श्री चैतन्यप्रसाद सुपद वाणी गुणागाये
इष्टभागवत कृष्ण कृष्ण गोविन्द मनाये
मर्यादा निजुनियमसौ धारी जीवन अवधि श्रुत

❀ श्री कुसुमहरनाथजी ❀ (८३)

श्री देव कुसुमहरनाथ पदप्रवल आत्मबल मानियै
आत्मतत्त्वकौ सत्त्व नहीं कहुं छिपै छिपायौ
सो अनन्तविधि सन्त कुसुमहरकौ यशगायौ
सेठ द्वारिकादास सेठ श्री धर्मदास किल
जगमोहन भगवानदास माणिकलालहु मिल
बंगदेश सौनामुखी वसिसेवे ब्रज आनियै

❀ श्री बनमालीलाल गोस्वामी ❀ (८४)

श्री बनमालीलाल दृढ़भाव राधिकारमण गुण
बैठे रसिक निकुञ्ज जुगल अनुराग जुगाये
बाद्य अनेक बजाय प्रियाप्रियतमहि सुनाये
लघुवान्धव साहित्य न्याय व्याकरणा विचक्षण
दामोदर आचार्य शास्त्रि गोस्वामि सुलक्षण
श्रीमाधव यादव विबुध पुत्र दोउन पंडित निपुण

❀ पं० श्री प्यारेलाल झल्लास्वामी ❀ (८५)

पाठक प्यारेलाल द्विज झल्लास्वामी मथुरापुरी
वैदिक वंशसनाढ्य आढ्य श्रीकृष्ण उपासी
वेदमंत्र उपनिषदनिष्ठ सद्वाक्य विलासी
सारस्वत श्री बासुदेव लक्ष्मणाचार्य मुनि
गोस्वामी पदवलित यज्ञविधि करत वेदधुनि
श्री राधाकृष्ण जिज्ञासु पुनि तत्त्वपुरातन माधुरी

❀ गो० श्री गोवर्द्धनलालजी टोकैत ❀ (८६)

गोस्वामि (श्री) गोवर्द्धनलालजी अधिकारी श्रीनाथपद
श्रीदामोदरलाल पुत्र अरु बन्धु गोपेश्वर
मिलिप्रबन्ध स्वच्छन्द कियौ अद्भुत योगेश्वर
श्री ब्रजभूषणलाल कांकरौली बरारमधि
श्रीयुत विठ्ठलनाथ मधुपुरी गद्दी सद्बुधि
श्री वल्लभलाल बड़ौदरा गद्दीधर वल्लभ प्रमद

❀ श्री हरिप्रियादासजी ❀ (८७)

महन्त श्री हरिप्रियादासजू आचारज श्रेणी गही
सन्तसाधु सर्वस्व ऊर्ध्वरेता बड़भागे
श्री वृन्दाबन धाम भागवतरस अनुरागे
पड़रौनानृप ब्रजनारायण मान्य विचक्षण
सेवाविद्या वाक्यसिद्ध अद्भुत गुणलक्षण
द्विज सारस्वत कुलप्रघट श्री निम्बार्क कृपा लही

❀ पं० श्री रामकृष्णदासजी ❀ (८८)

राजनभक्ति फहरायअति श्री रामकृष्ण यशकी ध्वजा
निष्ठानिजेन बैठि बढ़ाई कुंजलतनमें
ध्यान बिहारी रासकेलि अवलोकि जुतनमें
भैया बलवंतराव आदि भूपनहु लुभाये
त्याग रूप प्रत्यक्ष भाव ह्रद लोक दिखाये
श्री कृष्णचैतन्य पदाब्जरति जानत वहु राजा प्रजा

❀ श्री रामदासजी ❀ (८९)

कलिमलके नाशन विषें श्री रामदास गौराङ्ग मनु
संकीर्तन हरिनाम धामधुनि धरनीगाजै
प्रेमसिन्धु उन्मत्त खोलकरताल सुबाजै
होय प्रतक्ष प्रतीति मिले श्री राधामाधव
अश्रुधार संपातजात पाबाण हृदयद्रव
शिष्य अनन्त सुसन्तसंग जन्मभूमि नदियो सघनु

❀ श्री प्राणगोपाल गोस्वामी ❀ (९०)

तत्त्व भागवत प्रकाशन श्री प्राणगोपाल मैत्रेयसम
नवद्वीप रससिन्धु चन्द्र पूरणा परकाशयौ
भावगठन गम्भीर तरंगनु रंगु विकाशयौ
गोस्वामी गुणालक्ष वास्तविक प्रघटहोतसुनि
कथा कृष्णचैतन्यकेलि हृदयोत्थित सुध्वनि
श्रीकृष्णसन्दर्भ आदिक विविध ग्रन्थप्रकाशे रुचिपरम

❀ श्री राजा विश्वनाथसिंहजी ❀ (९१)

रसिक रासरस छत्रपुर श्री विश्वनाथ राजेन्द्रमणि

जुगललाल पदपद्मराग रंजित हृदयस्थल

मंजुकुंज नवकेलि माधुरी बसतजु अविचल

वाणीपद अनुराग नित्य वृन्दाबन रसनिधि

अन्तरंग प्रियभाव सहचरी रूपललित विधि

सखासखी नागा विरति प्रीति कृष्णचैतन रणि

❀ श्री राजा बलदेवदासजी बिड़ला ❀ (९२)

श्री राजा बलदेवदास बिड़ला कर्ण सद्गुण दानीप्रवल

न्याय वेदवेदान्त सिद्धसिद्धान्त बखानत

शास्त्रसार सबभांति तत्त्वमर्मजु पहिचानत

अष्टोत्तर शत यज्ञ भागवत सप्ताही किय

सबविधि पंडितवृन्द परमआनन्द तोषदिय

श्री जुगलकिशोर घनश्यामदास कीर्तिमहेश्वर वैश्यकुल

❀ श्री राजा कमलेश्वरीप्रसादजी ❀ (९३)

श्री कमलेश्वरीप्रसादसिंह राजा गुण सीमाधर

अटलभक्ति संचार गौरपद प्रेमहुलासी

पुरमंगेर निजराज वहिमुख कियविश्वासी

श्री वृन्दाबन रम्य कृष्णामन्दिर बनवायो

भवसागर गंभीर धीर दृढ़ सेतु सजायो

सुत श्री शिवनन्दन तथा रघुनन्दन समता करी

❀ गो० श्रीजुगलकिशोरजी ❀ (९४)

श्रीजुगलकिशोर श्रीजगन्नाथ श्रीव्यासवंस गोस्वामिप्रभु
द्विज सनाढ्य गुण आढ्य मान मर्यादा पाई
सेवा जुगल किशोर परात्पर पूरणा ताई
चरखारी मुरसान विजावर नृपति शिष्य जिन
व्रत अनन्य चैतन्य भजन निधि मगन रात्रिदिन
सुत श्रीराधाकिशोर अरु कृष्णाकिशोर प्रसिद्ध विभु

❀ गो० श्रीगोकुलनाथ जी ❀ (९५)

गोस्वामी श्री गोकुलनाथजी प्रघटे गोकुलनाथ पुनि
षट् शास्त्रज्ञ सु-वालकृष्णा-सेवा धन सर्वसि
सुत श्रीगिरिधरलाल श्रीदीक्षित गोपीनाथ शशि
आदि किये सब विज्ञ भट्ट श्रीरमानाथ चसि
शास्त्री पद देवर्षि संवलित पुष्टि तत्व लसि
श्रीब्रजनाथ, गौर, द्वारा किये ग्रन्थ प्रकाशित अनेकन

❀ श्रीअनन्ताचार्यस्वामी ❀ (९६)

सर्व शास्त्र सम्पन्न श्री स्वामी अनन्ताचार्य वर
मोहमयी मधि तुङ्ग रंग मन्दिर वनवायौ
कांची कैरव चन्द अन्ध पाखण्ड मिटायौ
भक्ति भाव गंभीर धीरता साधु सुसम्प्रत
न्याय वेद सिद्धान्त सहजही कीये हृद्गत
श्री रामानुज गद्दीस्थ गुण प्रतिवादिन कौ भयंकर

❀ गो० श्रीमधुसूदनलालजी ❀ (९७)

श्री वल्लभकुल रसिकेन्दु श्री मधुसूदन गोस्वामिवर
गद्दी अमदावाद पुत्र रणछोरलाल जिन
गोस्वामी ब्रजरत्नलाल, सूरत, शुभ लक्षन
मधुसूदन गोविन्दराय युग पुत्र महामुनि
श्रीवल्लभ आचार्य कियौसुखस्वानि कामवनि
काशी मिरिधरलाल श्री मुरलीधर लघुलाल घर

❀ श्रीरायचन्द्रहारबलीजी ❀ (९८)

रसनिधि विधि मर्मज्ञ श्री चन्द्रहार रस खान मनु
सब उत्सव हर्षाय आय पहुंचें वृन्दावन
निरखि बिहारीलाल करें द्वग सफल सुभावन
छप्यै छन्द कबित्त सवैया बिक सित गामें
नब नब छटो निहार अनौखे काव्य बनामैं
श्रीराय राजेश्वर बली सह दरियोबाद निवास जिनु

❀ श्री रामवल्लभा शरणजी ❀ (९९)

श्रीराम रसायन जिनसुधन श्रीरामवल्लभाशरण धनि
अवधपुरी वैराग्य ध्वजा रोपी कलि अन्तर
मानहु मुनी बशिष्ठ प्रघट जानत देशान्तर
तुलसीकृत बाल्मीकि भागवत सार सुधानिधि
भाषत सरस स्वतंत्र भादभरि शील परम बिधि
श्रीसरयूतट निकट वसि घाट जानकी जननि बनि

❀ बाबू श्रीबनारसीप्रसादजी ❀ (१००)

भागलपुर बासी रसिक श्री वैष्णवदास बनारसी
पुत्री पुत्र कलत्र कुटुम्बी किकर चाकर
सभी किये हरिनाम भजनमें लीन उजागर
चम्पानाले बसत साधु नरसिंहदास तिन
आज्ञा पाई सदन बिहारी पधराये जिन
सुत सरूप हरिःशरणा, हित अभिलाषी हांसीलसी

❀ श्रीकृष्णसेवकवृन्द ❀ (१०१)

श्रीत्रिभुवन ब्रजजीवनदास सेठ केशवदास कल्याणु अरु
सर जगमोहनदास श्रीलक्ष्मोवाई हरिभजु
जीवन परभूदास रतनसी धनजी सेठजु
कृष्ण पुरुशोत्तमदास गोवर्द्धनदासरणछोरजि
श्री संकर्षणदास गोवर्द्धनबाई भवेरजि

श्रीरणाछोरदास हरजीवन हु श्रीविट्ठल लक्ष्मीदासबरु

❀ श्रीब्रजलालजी ❀ (१०२)

रसनिधि श्रीब्रजलाल हिय कुंज केलि विलसत सदा
श्रीधरणीधर स्वामि श्रीधरोचार्य महामति
टट्टी स्थान महन्त साधु भगवानदास कृति
सेठ जानकीदास भक्त मोहन हार्दिकबिधि
हरिगुणलाल विशाल भक्त श्रीरामरत्न धुनि
श्रीराजालाल डिण्टी तथा श्रीसाधुचरन गानन्ददा

❀ गो० श्री रघुनन्दन प्रभुः ❀ (१०३)

श्रीनबद्धीप आनन्द घन श्रीरघुनन्दन गोस्वामि विभु
 राधामदन गोपाललाल चैतन्य भाव भरि
 सेवत निसद्दिन भजन ध्यान सन्मान प्रानधरि
 संनिधि ललितासखी करत वैष्णवन समादरि
 यथालाभ सन्तोष कीर्ति कीर्तन जु गौर हरि

निकट बसत जिनके सदा श्रीकृष्णदास रसरासप्रभु

❀ श्रीचैतन्यभक्तवृन्द ❀ (१०४)

श्री सदानन्द गोविन्द श्री जगन्नाथ आनन्दघन
 नवचैतन्य सुरसिक गौरगन गौरचरन पुनि
 प्रेम किशोरीदास कृष्णजीवन वृन्दावनि
 रूप सनातन शिष्य माधुरीदास महामति
 सुवलश्याम गोपालदास हरिदास भक्तकृति

श्री श्रीमाधव मुदित सुत भगवत मुदित चैतन्यधन

❀ श्रीरसिकोत्तंसजी ❀ (१०५)

श्रीरसिकोत्तंस उत्तंसजिन रच्यौ प्रेम पत्तन मधुर

श्रीरामराय गोस्वामि गौरगीता रचिगाई

हैं श्रीनित्यानन्द महाप्रभु शिष्य सिहाई

ताविधि षट्माधुरी माधुरीदास बनाई

रचित प्रबोधानन्द सरस्वति शतक सुहाई

श्रीचैतन्य चन्द्रामृत तथा श्रीरोधासुधानिधिसुधि सुधर

❀ श्रीमणोन्द्रचन्द्रनन्दी ❀ (१०६)

कलिकाता महाराज श्रीमणोन्द्रचन्द्र नन्दी सुधर
दिल्ली मधि हरिभक्त, सेठमल वैजनाथ जन
जोखी आत्माराम बिहारीलाल सन्त धन
गौरोशंकर सेठ वास खुर्जा पुर अन्तर
वम्बई श्रीहनुमानदास पोद्दार प्रेमसर
श्रीवल्लभ सिद्ध गोस्वामि ब्रज श्रीहरंराम पटना नगर

❀ श्रीललिताशरणा गुरुः ❀ (१०७)

लही कृपा श्रीललिताशरणा सुखद हरोहर चरन की
दुर्वल जग अनुराग त्याग बड़भाग मनाये
रामायणा के पढ़त गौर प्रभु सौ मिलपाये
रांगोशंकर विप्र वैश्यवर घंसी रामजु
रस चर्चा संवलित शिवपुरी रामेश्याम सु
भीष्मपुर श्रीपरमेश्वरीसिंह आदि चित हरन की

❀ श्रीहरीहर प्रभुः ❀ (१०८)

स्वतः प्रकाश प्रघटे परम प्रेम सिन्धु श्रीगौरहरि
निशा दिवस निज नाम धाम धुनिगूंजे आश्रम
अनुपम अखिल चरित्र कृष्णचैतन्य यथाक्रम
गंगातट रचिवंद वचाये ग्राम अनेकन
रोकत प्रवल प्रवाह वसे भक्तन सह निर्जन
गमे भीष्मपुर के निकट रोपी ध्वजा दुरन्त करि

ॐ फलस्तुतिः ॐ (१०९)

श्रीहरि भक्तिभाव भवभूत हरि भक्तनजो नित गोइ है
नशति न मेरी भक्त वाक्च भीता भवि रांची
जिभुवन में विरज्यार भक्तिको मारन सांगी
श्रीप्रियतम गोस्वामि पुन अग यमुना बल्लभ
'रसिकभक्त' बशि माल, रचो पावो रस दुर्लभ
श्री राधाभाष्य माल कुंज केलि सुख पाइ है

ॐ प्राथना ॐ (११०)

श्रीरसिकभक्त मालमें "रसिकभक्तमाल, रहियो दश
कुंज बहल की अटल टहल अधिराल वनिदासी
जुगल लाड़िलीझाल गित्य रस रास विलासी
निशा भोर कहीं अंतर न जानत मिथ अन भासी
सदां तत्सुखी देने अगल विन नियम उपासी
तिनहि हिंसे सीमाथ्य सुख शोकरु मृदु सौरभ लसी

इति श्रीमन्माध्वगौडेश्वराचार्य सारस्वत लिज
द्विवाकर श्रीराधाभाष्य सेवी श्रीब्रह्म राम—

राम गोस्वामि कंसज गो० श्रीवासुदेव

मधु तनूज श्रीप्रियतमलालसुनु गो०

श्रीरसिकभक्तमाल मणीत

ॐ श्रीरसिक भक्तमाल ॐ

समाप्त